Issue-14; Vol.01, Sept. 2023
ISSN–2231-1130
●●●●VEETHIKA●●●

23.0 अमीर खुसरो और उनका खालिकबारी

- ***शिवम पाण्डेय*** ,शोधार्थी हिन्दी विभाग, बी०एस०एन०वी०पी०जी०कॉलेज चारबाग लखनऊ
- ***डॉ प्रणव कुमार मिश्र*** ,एसोसिएट प्रोफेसर, बी०एस०एन०वी० पी०जी० कॉलेज चारबाग लखनऊ
  ई.मेल- pranavmishra16@gmail.com

शोध-सार

आदिकालीन साहित्यविविधताओं से भराहुआहै। इस काल के उत्तरवर्ती दौर में एक बहुत बड़े साहित्यिक व्यक्तित्व का अवतरण हुआ, जिन्हें अमीर खुसरो के नाम से जाना जाता है। अमीर खुसरो का बचपनका नाम अबुल हसन था। लेकिन उनका उपनाम खुसरो इतना मशहूर हुआ कि असली नाम छिपसागयाऔर वे अमीर खुसरो नाम से ही विख्यात हो गए। वे हिंदी के अत्यंत उल्लेखनीय रचनाकार इस अर्थ में भी हैं कि उन्होंने तेरहवीं- चौदहवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी का 'हिंदवी के रूप में सूत्रपात किया। गौरतलब है कि इस भाषा का नामकरण भी स्वयं उन्होंने ही किया, इस बात की जानकारी हमें अमीर खुसरो की फारसी रचना 'मसनवी नुह सिपहर' तथा 'मसनवी किरानुस्सादैन' से मिल जाती है।

वे अरबी, फारसी, तुर्की और हिंदी के गहरे जानकार थे। उन्होंने अनेक ऐसी विधाओं में हिंदी में रचना की जो उनके पहले नहीं मिलतीं । अन्य शब्दों में ऐसा कहा जा सकता है कि हिंदी भाषा में दोहों, गीतों, गजलों और मर्सियों की शुरुआत उन्होंने ही की। वे गाते भी थे। हिंदी ग़ज़लों को गाकर लोकप्रिय बनाने का श्रेय खुसरो को ही दिया जाता है। सावन, बरखा, फागुन आदि ऋतुओं पर लिखे उनके गीत लोगों की जुबान पर चढ़ गए। सूफी दरगाहों में उनकी कव्वालियाँ खूब लोकप्रिय हुई। फारसी भाषा से हिंदी भाषा के पहले शब्दकोश 'खलिकबारी' या 'निसाबे जरीफी की रचना का श्रेय भी अमीर खुसरो को ही है। उन्होंने अपने गुरु मशहूर सूफी संत हज़रत निजामुद्दीन औलिया के कहने के बाद श्री कृष्ण की जीवनी पर हालात – ए- कन्हैया' नामक पुस्तक का लेखन किया। वे एक साथ साहित्यकार, इतिहासकार, संगीतज्ञ तथा सूफी विचारधारा के साधक थे ।

प्रश्न यह उठता है कि हिंदी कविता के इतिहास मेंअमीर खुसरो की प्रसिद्धि का आधार क्या है ? दरअसल उनकी पहेलियों, दो सखुने, मुकरियों,अनमेलियाँ या ढकोसले, निसबतें,सूफी फारसी-हिंदवी मिश्रित गजलें और रुबा साखियों या दोहें, हिंदवी गीत या कव्वालियों, फारसी-हिंदवी मिश्रित ग़ज़लें और रुबाइयों ने खूब धूम मचाई। इन सबमें उनका खालिकबारी जो हिन्दी – फारसी का एक छन्दोबद्ध कोश है जिसने साहित्य जगत में मार्गदर्शक की भूमिका बनकर स्थापित हुआ।

प्रमुख शब्द: *अमीरखुसरो, खड़ीबोली, अरबी, हिन्दी, फ़ारसी,ग़ज़ल, खालिकबारी आदि।*

प्रस्तावना

भारत की पुण्यभूमि ने अनेक महान विभूतियों को जन्म दिया है, जिनका यशोगान भारत में ही नहीं सम्पूर्ण संसार में गूँज रहा है। इन्हीं महान विभूतियों में से अद्भुत प्रतिभा सम्पन्न हिन्दी साहित्य के आदिकालीन कवि अमीर खुसरो थे। अमीर खुसरो बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न सूफी सन्त, महान कवि, बहुभाषाविद् एवं उच्चकोटि के संगीतज्ञ आदि थे। खुसरो फारसी तथा हिन्दी दोनों भाषाओं के लोकप्रिय कवि हैं। अमीर खुसरो खड़ीबोली हिन्दी के प्रथम कवि माने जाते हैं।

खुसरो की हिन्दी रचनायें आज भी अत्यन्त लोकप्रिय हैं। उनका हिन्दी काव्य आज भी इस बात के लिये प्रमाण स्वरूप है कि उन्हें हिन्दी से कितना प्रेम था। अमीर खुसरो ने अपने हिन्दी प्रेम के प्रकट करते हुये लिखा है- तुर्क हिन्दुस्तानियम मन हिन्दी गोयम जवाब । शक्र मिस्री न दारम कज़ अरब गोयम सुखन ।।

अर्थात् मैं हिन्दुस्तान का तुर्क हूँ और हिन्दवी में उत्तर देता हूँ। मेरे पास मिस्र की मिठास नहीं कि मैं अरबी में बातें करूं। अमीर खुसरो हिन्दु-मुस्लिम संस्कृति के एक प्रधान प्रतिनिधि थे उन्होंने धर्मो-हिन्दु तथा मुसलमान, दो भिन्न भाषाओं- हिन्दी तथा फारसी एवं दो दो पृथक अलग-अलग सभ्यताओं में अपनी रचनाओं के माध्यम से परस्पर समन्वय का कार्य किया था। निश्चय ही उनका व्यक्तित्व महान तथ कृतित्व विशाल था।

अमीर खुसरो का जीवन परिचय

नाम: अमीर खुसरो का वास्तविक नाम अबुल हसन यमीनुद्दीन तथा खुसरो उपनाम था। जलालुद्दीन खिलजी ने उनकी कविता से प्रसन्न होकर इन्हें अमीर की उपाधि से सम्मानित किया था। तभी से यह मलिकुश्शोरा अमीर खुसरो कहे जाने लगे। अमीर खुसरो ने प्रारम्भ में 'सुल्तानी' उपनाम से कवितायें लिखनी आरम्भ की थीं। इनके प्रथम फारसी काव्य - संग्रह में इनका सुल्तानी उपनाम है। खुसरो के आध्यात्मिक गुरू हजरत निजामुद्दीन औलिया (रह0) इन्हें प्रेमपूर्वक 'तुर्क' या 'तुर्क अल्लाह' नाम से पुकारते थे।' ईरान के प्रसिद्ध फारसी कवि 'अफ' तथा 'शिराजी ने खुसरो को तूती ए हिन्द नाम से सम्बोधित किया।

जन्म: अमीर खुसरो के जन्म-स्थान तथा जन्म - तिथि के विषय में विद्वानों में मतभेद है। प्रो० मुमताज हुसैन का मत है कि खुसरो का जन्म स्थान दिल्ली है। वह लिखते हैं -

"अमीर खुसरो का मौलद देहली था न कि पटियाली।"

परन्तु लगभग सभी विद्वान एकमत हैं कि खुसरो का जन्म स्थान 'पटियाली' ज़िला 'एटा' (उत्तर प्रदेश) है। जिसको पहले 'मोमिनाबाद' या मोमिनपुर भी कहा जाता था।" यह स्थान गंगा नदी के किनारे स्थित है। जन्म तिथि के विषय में कुछ विद्वानों का विचार है कि खुसरो का जन्म में 55 ई0 में हुआ था। परन्तु प्रायः सभी विद्वान एक मत 652 हि० अर्थात् 1254 है कि खुसरो का जन्म 651 हि0, 1253 ई0 में हुआ था। इस प्रकार अमीर खुसरो का जन्म 1253 ई0 में उत्तर प्रदेश के 'पटियाली' जिला एटा' नामक स्थान में हुआ था।

पूर्वज: अमीर खुसरो के पिता अमीर सैफुद्दीन तुर्क थे। उस समय तुर्क अपनी वीरता के लिये प्रसिद्ध थे। ये पश्चिमी एशिया में दूर-दूर तक फैले हुये थे। अमीर सैफुद्दीन का कबीला चंगेज खाँ के आतंक से तंग आकर भारत की शरण में आया था। उनके मूल कबीले का नाम 'लाचीन' या 'हज़ारये लाचीन' था। तुर्की शब्द लाचीन का अर्थ 'गुलाम', 'बाज या शाहीन' होता है। डॉ० वहीद मिर्ज़ा व शिबली नौमानी का विचार है कि यह कबीला मावराउनहर' के एक ऐतिहासिक नगर 'कश' का निवासी था। सम्पूर्ण जगत में भारत ही ऐसा देश था जिसमें ये प्रवासी लोग शान्ति से अपना जीवन व्यतीत कर सकते थे इसलिये अमीर सैफुद्दीन शमसुद्दीन अल्तमश के शासनकाल में भारत आये। अमीर सैफुद्दीन कुशल सैनिक थे, इसलिये शीघ्र ही दिल्ली के दरबार में उनको नौकरी मिल गयी। सुल्तान ने उनको सेना में एक महत्त्वपूर्ण पद प्रदान किया तथा अपनी विशेष मण्डली में भी सम्मिलित कर लिया 124 उन्हें पटियाली में थोड़ी सी जागीर भी प्रदान कर दी तथा 1200 तनके वार्षिक आय भी मिलने लगी। खुसरो अपनी रचनाओं में अपने पिता को सैफ शमसी तथा सुल्तानी शमसी नाम से सम्बोधित करते हैं। अमीर खुसरो की माता भारतीय थी। उनका नाम दौलतनाज़ था। ये गयासुद्दीन बलबन के प्रसिद्ध प्रतिरक्षा मंत्री इमादुलमुल्क की सुपुत्री थी।

शिक्षा: अमीर खुसरो के पिता स्वंय पढ़े - लिखे नहीं थे, क्योंकि उन्होंने अपने काव्य संग्रह 'गुर्रतुल कमाल' की भूमिका में 'उम्मी' अर्थात अनपढ़ बताया है। परन्तु फिर भी उनके पिता ने उनकी शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध किया था। इस प्रकार खुसरो बाल्यकाल से ही शिक्षा ग्रहण करने लगे थे। उस काल में सुलेख पर अधिक बल दिया जाता था। मौलाना सादुद्दीन खुसरो को सुलेख का अभ्यास कराया करते थे। शिबली नौमानी के शब्दों में- "जब होश सम्भाला तो उनके वालिद ने उनकी मकतब में बैठाया और खुशनवीसी की मश्क के लिये मौलाना सादुद्दीन खतात को मुक्रेर किया। खुसरो बाल्यकाल से ही बड़े मेधावी थे। परन्तु सुलेख आदि में उनकी

रूचि नहीं थी। वह इस छोटी सी आयु में ही शेर कहने लगे थे। अभी खुसरो आठ वर्ष के ही थे कि उनके पिता का स्वर्गवास हो गया और वह अपने नाना इमादुलमुल्क के यहाँ दिल्ली में रहने लगे। नाना ने उनकी शिक्षा का अच्छा प्रबन्ध किया और बड़े ही स्नेह के साथ उनका पालन पोषण किया। इमादुलमुल्क बहुत प्रभावशाली व्यक्ति थे। उनके यहाँ खुसरो को अपनी प्रतिभा के विकास के लिये अनुकूल वातावरण प्राप्त हुआ।

आध्यात्मिक गुरू : अमीर खुसरो के आध्यात्मिक गुरू प्रसिद्ध सूफी सन्त हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया (रह0) ध हज़रत निजामुद्दीन औलिया का पूरा नाम मुहम्मद बिन अहमद बिन अली अन्जारी निजामुद्दीन औलिया था । " उन्हें आदरपूर्वक 'सुल्तानुल मशायख (बुजुर्गों के बादशाह), 'महबूबे इलाही (खुदा के प्यारे). सुल्तानुल औलिया (वलियों के बादशाह) के नाम से भी लोग पुकारते थे।" अमीर खुसरो की गुरु से दीक्षा लेने की कथा भी रोचक है। खुसरो के पिता अमीर सैफुद्दीन महमूद अपने दोनों पुत्रों को लेकर हज़रत महबूबे इलाही (रह0) की सेवा में उपस्थित हुए। संत के द्वार पर पहुँचने पर जब अल्पायु खुसरो को पिता का उद्देश्य ज्ञात हुआ, तब उन्होंने पिता से निवेदन किया कि मुरीद तो इरादा करने वाले को कहते हैं। जब तक मेरा स्वयं इरादा मुरीद होने का न हो तो मैं मुरीद कैसे हो सकता हूँ अतः आप बड़े भाई को लेकर मुरीद कराइये. मैं यहीं बाहर बैठता हूँ। उनके पिता बड़े पुत्र को लेकर भीतर चले गये और खुसरों बाहर बैठकर मन ही मन एक रूबाई बनाने लगे। उन्होंने सोचा कि यदि हज़रत शेख निजामुद्दीन औलिया आध्यात्मिक बोध सम्पन्न हैं तो इसका उत्तर अवश्य मुझे देंगे। खुसरो के पद्य यह थे

"तू आन शाही बरायवानल हज़रत, कबूतर गर नशींद बाज गरदद।

गरीबी, मस्तमन्दी बर दर आमद, बायायद अन्दरून या बाज गरदद ।"

अर्थात् तू ऐसा शासक है कि यदि तेरे प्रासाद की चोटी पर कबूतर भी बैठे तो तेरी कृपा से बाज बन जाये। एक दीन तरे द्वार पर आया है। वह भीतर आये कि लौट जाये ?

अभी खुसरो ने ये पद हृदय में रचे ही थे कि हज़रत निज़ामुद्दीन ने अपने एक सेवक को बुलाकर कहा कि एक तुर्क लड़का बाहर खड़ा है, तुम ये रुबाई उसके पास जाकर पढ़ दो-

"बयायद अन्दरून मर्द हकीकत, के बामायक नफ़्स हमराज गरदद।

अगर अबलह बुवद आन मर्द नादान । अज़ आन राही के आमद बाज़ गरदद।"

अर्थात् हे ! सत्य के अन्वेषक, भीतर आओ ताकि कुछ समय तक हमारे रहस्य के सहभागी बन सको। यदि आगन्तुक अज्ञानी है तो जिस मार्ग से आया है। उसी मार्ग से वापिस चला जाये।

ये सुनते ही खुसरो आत्म विभोर हो गए और शेख के पास तुरंत गए व उनके मुरीद अर्थात् शिष्य हो गए।

मृत्यु : अमीर खुसरो को अपने आध्यात्मिक गुरू शेख निजामुद्दीन औलिया से अत्यधिक स्नेह था। जिस समय उनके गुरू की दिल्ली में मृत्यु हुई उस समय वे अपने आश्रयदाता सुल्तान गयासुद्दीन तुगलक के साथ बंगाल में थे । जब खुसरो को अपने मुर्शिद के देहान्त का समाचार मिला तो उनके हृदय को बड़ा आघात पहुँचा। वे तुरन्त दिल्ली की ओर चल दिये तथा उनके पास जो धन-सम्पत्ति थी वह सब लुटा दी, कपड़े फाड़ डाले, मुँह में कालिख मल ली। अपने पीर की समाधि पर आकर कहने लगे

"सुबहान अल्लाह आफताबे दरज़मीं ओ खुसरो जिन्दा ।

अर्थात् 'सुबहान अल्लाह' सूर्य पृथ्वी के नीचे छिप जाये और खुसरो जीवित रहे।

ये कहकर खुसरो ने अपने सिर को कब्र पर मारा और मुर्छित हो गये 188 इसके पश्चात् खुसरो ने यह दोहा पढ़ा -

"गोरी सोवे सेज पर मुख पर डारे केस।

चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।।

हज़रत निज़ामुद्दीन औलिया अक्सर कहा करते थे कि मेरी ज़िन्दगी कि प्रार्थना करो क्योंकि तुम मेरे पश्चात् अधिक दिन तक जीवित नहीं रह पाओगे। लोगों को चाहिये कि तुम्हें मेरे बराबर में ही दफन करें। यह भविष्यवाणी सत्य सिद्ध हुई और अपने प्रिय मुर्शिद की मृत्यु के छः महीने के भीतर ही खुसरो का भी देहान्त हो गया। लगभग सभी सहमत हैं कि खुसरो की मृत्यु बुधवार के दिन 18 शिवाल 726 हि0 तदानुसार 27 सितम्बर 1325 ई0 को हुई थी तथा हज़रत निजामुद्दीन औलिया (रह0) की वसीयत के अनुसार खुसरो को उनकी कब्र के पास ही दफन किया गया था।

अमीर खुसरो का रचना संसार

अमीर खुसरो फारसी के महान कवि थे। उन्होंने फारसी के समानान्तर जो हिन्दी रचनाएँ की ये खुसरो को खड़ी बोली के आदि कवि के रूप में प्रस्तुत करती हैं। उनकी हिन्दी रचनाओं में उल्लेखनीय हैं। 1. पहेलियाँ 2. मुकरियाँ 3 निस्वतें 4. दो सखुन 5. ढकोसले 6. गीत 7. कव्वाली 8. फारसी हिन्दी मिश्रित छन्द 9. सूफी दोहे 10. गजल 11. फुटकल छन्द 12 खालिक बारी आदि महत्वपूर्ण है जो भारतीय जनमानस को छूती हैं। उन्होंने अपनी रचनाओं में रस, अलंकार एवं छन्द का प्रयोग किया हैं। भाषिक दृष्टि से उन्होंने खड़ी बोली एवं ब्रज भाषा का मुख्यतया प्रयोग किया है। खड़ी बोली में पहेलियों, मुकरियों के प्रयोग उल्लेखनीय हैं। खालिक बारी में मिश्रित हिन्दी का प्रयोग हैं। खड़ी बोली एवं ब्रज भाषा के स्वरूप को खुसरो की हिन्दी रचनाओं को समझने के लिए आवश्यक है। इसलिए इनके स्वरूप को भी उपर्युक्त विषयों के साथ स्पष्ट किया गया है।

खुसरो प्रमुखतः फारसी के कवि थे, किन्तु उन्हें हिन्दी में भी लिखने का शौक था। हिन्दी में उन्होंने कितनी कविताएँ लिखी, इस सम्बन्ध में निश्चय के साथ कुछ नहीं कहा जा सकता। जैसा कि स्वयं उन्होंने 'गुर्रतुलकमाल' की भूमिका में संकेत किया है कि वे हिन्दी कविताएँ लिखकर कदाचित् बाँट दिया करते थे। उनकी अधिकांश हिन्दी रचनाएँ गंभीर नहीं हैं, अत काव्य - गरिमा से मंडित फारसी रचनाओं के सामने हिन्दी के प्रति खुसरो का उदासीन होना बहुत अस्वाभाविक नहीं। खुसरो की आज जो हिन्दी रचनाएँ उपलब्ध हैं उनमें सारी की सारी उनकी नहीं हैं। कुछ पुराने ग्रन्थों में खुसरो की केवल फारसी कविता के सम्बन्ध में विवरण मिलता है। इस आधार पर कुछ लोगों का यह विचार है कि उन्होंने हिन्दी में कविता की ही नहीं, और उनके नाम पर जो कुछ प्रचलित है वह दूसरों की रचना है। किन्तु ऐसी धारणा साधार नहीं है। जैसा कि पीछे दिखाया जा चुका है, खुसरो ने 'गुर्रतुलकमाल' की भूमिका में लिखा है कि उन्होंने हिन्दी में कविता की है, किन्तु उसका विशेष महत्व नहीं था, अतः उनका संग्रह नहीं किया और मित्रों में बाँट दिया करते थे। इसके अतिरिक्त गुर्रतुलकमाल' की भूमिका में एक ऐसा शेर है जो फारसी और हिन्दी दोनों का हो सकता है:

आरी आरी हमा बियारी आरी

मारी मारी बिरह की मारी आरी

अमीर खुसरो की प्रमुख हिंदी रचना

I. खालिकबारी या निसाब-ए-ज़रीफी या मंज़ूम-ए-खुसरो - यह हिंदवी फारसी शब्दकोश है जो काव्यमय है।
II. दीवान-ए-हिंदवी या कलाने-ए-हिंदवी- इसमें आम आदमी के लिए पहेलियाँ, ढकोसले संकलित है।

III. तराना-ए-हिंदवी या कलाम-ए-हिंदवी इसमें आम भाषा में पहेलियों, ढकोसलों, निस्वतों, दो सुखनों, मुखम्मस, सावन, बरखा, शादी आदि गीतों गजलों, कव्वालियों को संकलित किया गया है।

IV. हालात-ए-कन्हैया व किशना ऐसी कथा है कि गुरु निजामुद्दीन औलिया के सपने मैं भगवान श्री कृष्ण आए फिर गुरु ने खुसरो से कहा कि तुम हिंदवी में कृष्ण की स्तुति लिखो। गुरु के निर्देशानुसार श्री कृष्ण पर यह पुस्तक खुसरो ने तैयार की।

V. नज़राना-ए-हिंदवी सांस्कृतिक एकता का गुलदस्ता।

VI. लुआली-ए-उमान या जवाहर ए खुसरवी- यह भी खुसरो की कविताओं का संकलनहै।

VII. अमीर खुसरो को हिंदी से कितना लगाव था. इसका अंदाजा इससे लगाया जा सकता है। कि वे अपने को हिंदुस्तान की तूती कहते हैं और और खुद को हिंदवी भाषा की मिठास का कायल बताते हैं वे दीवान गुर्रतुलकमाल में कहते हैं:

तुर्क-ए-हिंदुस्तानियम मन हिंदवी गोयम जवाब
चु मन तूती-ए-हिंदम अज रास्त पुरसी।
जे मन हिंदवी पुरस ता नरज गौयम,
शकर मिस्त्री न दारम कज़ अरब गोयम सुखन ।।

अर्थात मैं हिंदुस्तानी तुर्क हूँ मैं हिंदुस्तान की तूती हूँ। अगर वास्तव में मुझसे कुछ पूछनाचाहते हो तो हिंदवी भाषा में पूछो। मैं तुम्हें हिंदवी में अनुपम बातें बता सकूँगा। मेरे पास मिस्र की शक्कर नहीं है जो अरबी में बात करूँ। यहाँ हिंदवी से तात्पर्य तेरहवीं चौदहवीं शताब्दी की वह भाषा या बोली है जो आम जनता द्वारा बोली या समझी जाती थी हिंदवी भाषा दरअसल खड़ी बोली है। वे बहुभाषाविद थे, लिहाज़ा उन्होंने अपनी कविता समेत अन्य रचनाओं में जिस हिंदी का प्रयोग किया वह शुरू से ही समासिक बनावट के साथ आगे बढ़ी।

खालिकबारी

खालिकबारी हिन्दी - फारसी का एक छन्दोबद्ध कोश है। वैसे शब्द तो इसमें अरबी के भी हैं, और कुछ तुर्की के भी, किन्तु इसमें वाक्य अथवा वाक्यांश केवल हिन्दी या फारसी के ही हैं, अतः इसे इन्हीं का कोश कहा जा सकता है। अरबी तथा तुर्की के इसमें केवल वे ही शब्द है, जो फारसी भाषा के शब्द भण्डार के अंग रहे हैं। खालिकबारी प्रसिद्ध फ़ारसी कवि अमीर खुसरो की महत्वपूर्ण रचना है। उदाहरण के लिए डा० श्याम सुन्दर दास ने लिखा है, 'खुसरो ने हिन्दी और अरबी-फारसी शब्दों का प्रचार बढ़ाने तथा हिन्दू-मुसलमानों में परस्पर भाव-विनिमय में सहायता पहुँचाने के उद्देश्य से खालिकबारी नाम का एक कोश पद्य में बनाया था। कहते हैं कि इस कोश की लाखों प्रतियाँ लिखवाकर तथा ऊँटों पर लदवाकर सारे देश में बाँटी गई थीं। किवदन्ती भी है-

एक लाख ऊँट सवा लाख गाड़ी।
तेहि परलादी खालिकबारी ।।

इसी प्रकार डा० धीरेन्द्र वर्मा ने भी खुसरो की इस रचना को महत्वपूर्ण कहा है, किन्तु साथ ही यह भी कहा है कि इसका जो रूप प्राप्त है वह अधूरा है।' इस अधूरे कहने का अर्थ यह है कि वे भी मूलतः खालिकबारी को बहुत बड़ी रचना मानते हैं, और यह भी मानते हैं कि प्राप्त रूप उसका अंश मात्र है। अनेक विद्वानों में ये विवाद है कि ये किसकी रचना है। पर सारी बातों को देखते हुए निश्चय के साथ यह नहीं कहा जा सकता कि यह कोश प्रसिद्ध कवि अमीर खुसरो की रचना नहीं ही है। यों सनिश्चय यह कहने का बहुत प्रौढ़ आधार न होते हुए भी कि यह उन्हीं अमीर खुसरो की है संभावना उन्हीं की रचना होने की है जहाँ तक शीरानी साहब के कहने का सम्बन्ध है कि यह किसी जियाउद्दीन की है, असम्भव नहीं कि खुसरो की यह रचना मूलतः काफी बड़ी रही हो और जियाउद्दीन नामक व्यक्ति ने उसी को अपने ढंग से संक्षिप्त करके इसहाक के कहने से बच्चो के लिए यह रूप दे दिया हो शीरानी साहब वाली पाण्डुलिपि की पुष्पिका में रचयिता के रूप में 'जियाउद्दीन' के नाम का यह कारण हो सकता है। ऐसी स्थिति में खालिकबारी के जितने भी वर्तमान रूप उपलब्ध है, उनकी अर्थव्यवस्थाओं, कमियों और गलतियों का दायित्व मूल लेखक पर न होकर संक्षेपकर्ता जियाउद्दीन पर या बाद में उसमें प्रशितांश जोड़ने वालों पर है। कहना न होगा कि आज खालिकबारी के अनेक

पाठ उपलब्ध हैं, और उनमें काफी अन्तर है। मैंने अपना पाठ (जो इस पुस्तक में दिया जा रहा है) इन्हीं के आधार पर तैयार किया है, यद्यपि मेरा यह दावा नहीं है कि पाठविज्ञान की दृष्टि से यह मेरा पाठ बहुत वैज्ञानिक है।
यो अगर कुछ लोग इस कोश को प्रसिद्ध अमीर खुसरो की रचना न मानें तब भी इसका महत्व विशेष कम नहीं होता, क्योंकि जहाँगीर के काल की रचना मानने पर भी, हिन्दी कोशों की परम्परा में यह काफी प्राचीन कोश ठहरता है, अतः इसके ऐतिहासिक महत्व से इनकार नहीं किया जा सकता है। एक बात और महमूद शीरानी इसे जहाँगीर के काल की रचना मानते हैं, जबकि औरंगजेब के काल में इसे अमीर खुसरो की रचना कहा गया है एक पीढ़ी में ऐसी भूल नहीं हो सकती। अतः असम्भव नहीं कि मूलतः यह अमीर खुसरो की ही रचना हो।

खुसरो एटा जिले में पैदा हुए, अवध में भी कुछ दिन रहे तथा दिल्ली में काफी रहे। खालिकबारी के शब्द भी तीन प्रकार के हैं खड़ी बोली के, ब्रजभाषा के, पूर्वी के। अतः इस कोश के शब्द भी इसे अमीर खुसरो से सम्बद्ध होने की ओर कुछ संकेत करते हैं ऐस ही दौलताबाद भी वे रहे जहाँ 'गोश्त के लिए हेडा शब्द चलता है। यो यह शब्द कबीर में भी आया है-

हेडा - रोटी खाय के सीस कटावे कौन।

निष्कर्षतः यह माना जा सकता है कि यह ग्रन्थ मूलतः खुसरो की रचना हैकिन्तु इसके प्राप्त रूप में लोगों ने काफी परिवर्धन, परिवर्तन, संक्षेपण और प्रक्षेपण किये हैं

खालिकबारी क्यों लिखी गई. इसे लेकर भी विवाद रहा है। डा० श्याम सुन्दर दास के अनुसार हिन्दी और अरबी-फारसी शब्दों का प्रचार बढ़ाने तथा हिन्दू मुसलमानों में विचार-विनिमय में सहायता पहुँचाने के लिए इसकी रचना हुई। 14 15 मुहम्मद हसन आजाद तथा बहुत से अन्य लोग इसे किसी भटियारी के लड़के के लिए लिखी मानते हैं। अमीर चिरैयाकोटी आदि के अनुसार उन ईरानी और तुर्की मुसलमानों के लिए यह लिखी गई जो भारत आ रहे थे तथा जिन्हें हिन्दी न समझने के कारण कठिनाई होती थी।" महमूद शीरानी के अनुसार बाबा इसहाक हलवाई के कहने से यह लिखी गई एक मतानुसार गयासुद्दीन तुगलक के कहने से उसके बेटे को हिन्दी पढ़ाने के लिए इसकी रचना की गई। ब्रजरत्नदास से अनुसार अमीर खुसरो ने अलाउद्दीन की आज्ञा से खालिकबारी लिखी। कुछ लोग यह भी मानते हैं कि हिन्दुस्तानियों को फारसी शब्दों का ज्ञान कराने के लिए इसकी रचना हुई। वस्तुतः इनमें कोई भी कथन बहुत सप्रमाण नहीं है।

यों इस बात के निर्णय के लिए निम्नांकित बातें महत्त्वपूर्ण हैं : (क) इसमें शब्द हिन्दी, फारसी, अरबी और तुर्की के हैं, किन्तु वाक्य या वाक्यांश केवल फारसी या हिन्दी के हैं। (ख) इनमें भी फारसी वाक्यों या वाक्याशों की संख्या हिन्दी से अधिक है। (ग) साथ ही फारसी वाक्य या वाक्यांश प्रायः सभी प्राप्त प्रतियों में समान रूप से पाये जाते हैं, उनमें पाठान्तर हैं भी, तो बहुत कम, इसके विपरीत हिन्दी वाक्य तथा वाक्यांश में पाठभेद काफी हैं, कुछ तो सभी प्रतियों में हैं भी नहीं। (घ) साथ डी कोशकार प्रायः फारसी शब्द के लिए हिन्दी शब्द देने का यत्न करता दीखता है, (खाल तिल बाशद; संग पत्थर जानिए, अस्प मीरां हिंदवी घोड़ा चलाब, सोजन ओ रिशतह बहिंदी सुई ताग, आदि) हिन्दी के लिए फारसी शब्द नहीं। यदि ऐसे स्थल हैं भी तो कम। शायद केवल वहाँ, जहाँ छन्द की आवश्यकता ने ऐसा करने को मजबूर किया है। दर हिन्दी', 'दर हिंदवी', 'बजवान-ए-हिंदवी' (हिन्दी या हिंदवी में), 'बहिंदी' (हिन्दी में) पद बार-बार कोश में आये हैं, जबकि 'दर ताजी (अरबी में) कम, तथा 'बजबान-ए-फारसी (फारसी भाषा में) या इस प्रकार के पद और भी कम इसके साथ ही जो शब्द इसमें आये हैं वे फारसी का परिचय देने के लिए संकलित किये गये नहीं लगते, क्योंकि फारसी दरबार की भाषा थी, शासन की भाषा थी, और ऐसे वातावरण के शब्द इस कोश में प्रायः नहीं के बराबर है। जो शब्द है, प्रायः दैनिक जीवन के हैं।

निष्कर्तः ऐसा लगता है कि यह फारसी माध्यम से हिन्दी का कोश है। इसका उद्देश्य है फारसी शब्दों के लिए हिन्दी में प्रयुक्त समानार्थी शब्दों का ज्ञान कराना फारसी में अरबी तथा तुर्की शब्द भी हैं, अतः फारसी के साथ अरबी (काफी शब्द) तुर्की (बहुत कम) शब्द भी दिये गये है। असंभव नहीं कि जो ईरानी, अरब, तुर्क यहाँ आए थे, उनको अपने दैनिक जीवन में हिन्दी या हिंदवी-भाषी लोगों के संपर्क में आना पड़ता था, अतः उनकी दैनिक आवश्यकतायें हिन्दी शब्दों का ज्ञान कराने के लिए यह ग्रन्थ लिखा गया हो। हिन्दी वाक्य कदाचित केवल छन्द के कारण ही प्रायः प्रयुक्त किये हैं, क्योंकि व्यवस्थित रूप से उनका ज्ञान कराने का यत्न इसमें नहीं है। यदि फारसी वाक्यों के समानार्थी हिन्दी वाक्यों का ज्ञान कराना होता तो कोश का स्वरूप कुछ भिन्न होता | समवेततः खालिकबारी में लगभग बारह सौ शब्द हैं जिनमें प्रायः 4 तुर्की, 236 अरबी, 475 हिन्दी तथा 480 फारसी के हैं। प्राचीन हिन्दी के शब्द भण्डार तथा अनेक हिन्दी शब्दों का ऐतिहासिक विकास जानने के लिए यह ग्रंथ काफी उपयोगी है।

सन्दर्भ सूची

एटा जनपद : साहित्य-संस्कृति सन्दर्भ ग्रंथ 'मंगलम', लेखक – डॉ. महावीर प्रसाद द्विवेदी
भारत की महान विभूति अमीर खुसरो – व्यक्तित्व एवं कृतित्व, लेखक-डॉ. परमानन्द पांचाल,
अमीर खुसरो और उनका हिन्दी साहित्य, लेखक – भोलानाथ तिवारी,
अमीर खुसरो का हिन्दवी काव्य, लेखक, गोपीचन्द नारंग,
हिंदी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल
खुसरो की हिंदी कविता, ब्रजरत्र दास,

****